आरती श्री गोपाल जी की

जै गोपाल हरे, प्रभु जै गोपाल हरे ।
दुर्बल दुःखी जनों के संकट सदा हरे ।।

क्रीट मुकुट, कटि किंकिन, पग नूपुर साजे ।
चारु चिबुक बिंवावर, कर मुरली राजे ।।

वक्षस्थल बन माला, कौस्तुभ मणि धारी ।
वृन्दा विपिन बिहारी, निज जन सुखकारी ।।

अलकावलि अति सुन्दर, भाल तिलक सोहै ।
कुण्डल द्वै मकराकृत सुर मुनि मन मोहे ।।

यदुनन्दन जग वंदन, कोमल श्यामांगे ।
वारिजवदन सुशोभित, निर्जित मदनांगे ।।

श्रेष्ठ सुहृद सर्वेश्वर, सर्व सृष्टि स्वामी ।
सत पथ परम प्रदर्शक, ईश गरूड़ गामी ।।

सुखसागर गुण आगर, नटनागर भगवन् ।
रसिकजन हृदयेश्वर, बृजपति विश्वात्मन् ।।

पूर्ण पुरुष पुरुषोत्तम, आनन्द घन राशी ।
नारायण नित नूतन, अव्यय अविनाशी ।।

कृष्ण नाम गुण कीर्तन, जो जन नित्य करै ।
अति अपार भवसागर, सहजहि पार तरै ।।

विवरण

श्री गोपाल प्रभु जी की जय हो । जो दुर्बल हैं एवं जो दुःखी हैं, ऐसे लोगों के संकट, गोपाल जी सदा हरते रहते हैं । आभूषणों से सुसज्जित इनका मुकुट है, कमर में करघनी सज रही है एवं पैरों में पायल सज रहें हैं, इनकी सुन्दर ठुड्ढ़ी अति सुन्दर लग रही है तथा हाथों में इनके मुरली बिराज रही है ।

इनकी छाती पर वन के फूलों की माला लटक रही है तथा कौस्तुभ के नगों से सुसज्जित मणि को घारण किए हुए हैं, वृन्दावन के बगीचों में भ्रमण करने वाले ये गोपाल जी अपने प्रेमियों को सुख पहुँचाने वाले हैं । इनके ललाट पे इनके काले घने बालों की छटा बड़ी ही सुन्दर लग रही है तथा इनके माथे पे चन्दन अति सुन्दर ढंग से शोभ रहा है ।

इनके कानों के दोनों कुण्डल मकरे की आकृति के समान है, जो देवता और मुनियों का मन मोह लेती है, ये यदुवंश के नन्दन, कोमल श्याम वर्ण के अंग वाले गोपाल जी को सारा जग वन्दना करता है ।कमल के समान इनका बदन सुशोभित हो रहा है तथा इनके अंगों की कांति मदन (कामदेव) के समान चमक रही है, ये सबों में श्रेष्ठ, सुन्दर हृदय वाले, सबके ईश्वर एवं सम्पूर्ण विश्व के स्वामी तथा सच्चे पथ पर चलने की सीख देनेवाले इन गोपाल भगवान के गरूण सवारी हैं ।

ये सुखों के सागर हैं, सभी गुणों में ये आगे हैं तथा नित्य नये-नये नाटक करने वाले ये प्रभु अपने प्रेमियों के हृदय के स्वामी हैं एवं पूरे ब्रज के मालिक तथा पूरे विश्व की आत्मा हैं । ये पूर्ण पुरूष हैं, अर्थात् पुरूषों में उत्तम हैं, परम आनन्द देने वाले हैं । ये नारायण नित्य ही नए लगते हैं, इनका कभी विनाश नहीं हो सकता । कृष्ण के नाम का भजन जो नित्य रूप से भजता है, वह सहज ही भवसागर पार हो जाता है, अर्थात् मोक्ष प्राप्त कर लेता है ।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.